

सगुण धारा

(i) कृष्ण भक्ति शाखा

इस भक्ति शाखा के 5 प्रमुख सम्प्रदाय हैं।

कृष्ण भक्ति के सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	प्रवर्तक
1. बल्लभ सम्प्रदाय	बल्लभाचार्य
2. निम्बार्क सम्प्रदाय	निम्बार्काचार्य
3. राधाबल्लभ सम्प्रदाय	हित हरिवंश
4. हरिदासी (सखी) सम्प्रदाय	स्वामी हरिदास
5. चैतन्य (गौड़ीय) सम्प्रदाय	चैतन्य महाप्रभु

अष्टछाप—अष्टछाप की स्थापना **गोस्वामी विट्ठलनाथ** ने 1565 ई. में की। इसमें जो आठ कवि थे, उनमें से चार बल्लभाचार्य के शिष्य थे—सूरदास, कुंभनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास और शेष चार विट्ठलनाथ के शिष्य थे—गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, नन्ददास, चतुर्भुजदास। इन आठ कवियों पर विट्ठलनाथ ने अपने आशीर्वाद की छाप लगाकर 'अष्टछाप' का गठन किया।

कृष्ण भक्त कवियों की चर्चा चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ वावन वैष्णवन की वार्ता (दोनों के रचयिता गोकुलनाथ), भक्तमाल (नाभादास), भावप्रकाश (हरिराय), वल्लभ दिग्विजय (यदुनाथ) में की गई है।

पुष्टि मार्ग—बल्लभाचार्य का दार्शनिक मत शुद्धाद्वैत है तथा ये पुष्टिमार्गी थे। पुष्टि मार्ग की स्थापना **विष्णुस्वामी** ने की थी। पोषण तदनुग्रह को पुष्टि कहा जाता है। ईश्वर की कृपा ही पुष्टि है। कृष्ण भक्त कवि पुष्टिमार्गी कवि थे।

कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ

1. कृष्ण लीला का वर्णन,
2. प्रेम लक्षणा भक्ति,
3. सौन्दर्य चित्रण,
4. प्रकृति चित्रण,
5. रीति तत्व का समावेश,
6. मुक्तक काव्य की रचना,
7. ब्रजभाषा का प्रयोग।

भ्रमर गीत परम्परा

उद्धव-गोपी संवाद को भ्रमर गीत नाम दिया गया है। इसमें प्रेम, भक्ति सगुणोपासना का समर्थन तथा ज्ञान, योग, निर्गुणोपासना का खण्डन है। कृष्ण भक्त कवियों ने कृष्ण के बाल रूप (माधुर्य रूप) का चित्रण किया, किशोर जीवन की लीलाएँ चित्रित कीं। महाभारत के योगेश्वर कृष्ण का चित्रण इसमें नहीं हुआ।

कृष्ण भक्ति धारा के प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

कवि	काल	कृतियाँ
1. सूरदास	(1478-1583 ई.)	सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी।
2. नन्ददास	(1533-1583 ई.)	रस मंजरी, अनेकार्थ मंजरी, रूप मंजरी, भ्रमरगीत, रास पंचाध्यायी।
3. श्रीमट्ट		युगल शतक।
4. ध्रुवदास	1573-1643 ई.)	ब्रजलीला, दानलीला, मानलीला, सिद्धान्त विचारलीला।
5. स्वामी हरिदास	(1478-1573 ई.)	केलिमाल, सिद्धान्त के पद।



6. मीराबाई	(1498-1546 ई.)	नरसीजी का मायरा, गीत गोविन्द टीका, राग सोरठ के पद। रैदास इनके गुरु थे।
------------	----------------	--



7. रसखान	(1533-1618 ई.)	सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, दान लीला।
----------	----------------	--------------------------------------

(ii) राम भक्ति शाखा

हिन्दी राम भक्ति काव्य का मूल स्रोत संस्कृत में वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' महाकाव्य है। श्री सम्प्रदाय (रामानुजाचार्य), ब्रह्म सम्प्रदाय (मध्वाचार्य) रामभक्ति के दो सम्प्रदाय थे। रामानुजाचार्य की परम्परा में राघवानन्द और रामानन्द हुए। धनुष-बाण धारी राम के लोकरक्षक स्वरूप की उपासना का प्रारम्भ उन्होंने ही किया। हिन्दी में राम काव्य के प्रमुख कवि हैं—

1. **तुलसीदास (1532—1623 ई.)**—रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली, गीतावली, कृष्ण गीतावली, पार्वतीमंगल, जानकी मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामलला नहछू, रामाज्ञा प्रश्नावली, बरवै रामायण। रामचरितमानस (1574 ई.) तुलसी द्वारा रचित अवधी भाषा का महाकाव्य है। इसकी रचना लगभग 2 वर्ष 7 माह में हुई। यह अयोध्या, काशी, चित्रकूट में लिखा गया। रामचरितमानस में सात काण्ड हैं—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड। विनय पत्रिका मुक्तक शैली में ब्रजभाषा में रचित काव्य ग्रन्थ है तथा इसमें 269 पद हैं।



2. **ईश्वरदास**—भरत मिलाप, अंगद पैज।
3. **लालदास**—अवध विलास।
4. **अग्रदास**—ध्यानमंजरी, अष्टयाम, रामभजन मंजरी, उपासना बावनी, पदावली।

राम काव्य की प्रवृत्तियाँ—

1. राम शक्ति शील, सौन्दर्य से युक्त मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तथा विष्णु के अवतार हैं।
2. दास्य भाव की भक्ति।
3. समन्वयवादी प्रवृत्ति।
4. नैतिक एवं पारिवारिक मूल्यों का समर्थन।
5. नारी विषयक दृष्टिकोण।
6. प्रबन्ध रचना की प्रवृत्ति।
7. विविध काव्य शैलियाँ।

8. अवधी भाषा का प्रयोग।

9. दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया, छन्दों का प्रयोग।

10. रस एवं अलंकार योजना।

तुलसी राम भक्ति काव्य परम्परा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे इसी कारण उनके बाद राम काव्य परम्परा क्षीण हो गयी क्योंकि कविगण सोचते थे कि यदि उन्होंने राम काव्य पर रचना की तो यहाँ कवि तुलसीदास से उनकी तुलना अवश्य की जाएगी और उनके आगे वे टिक नहीं सकेंगे।

केवल केशव ने रामचन्द्रिका नामक महाकाव्य की रचना की जो अपनी क्लिष्टता एवं हृदयहीनता के कारण 'रामचरितमानस' की बराबरी नहीं कर सकता। आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त ने रामकथा के उपेक्षित पात्र उर्मिला के विरह का निरूपण करने हेतु 'साकेत' नामक महाकाव्य की रचना की।

9.3 रीतिकाल (1650-1850 ई.)

अन्य नाम—उत्तर मध्यकाल, शृंगार काल, अलंकृत काल, कलाकाल। रीति निरूपण (काव्यांगों के लक्षण, उदाहरण वाले ग्रन्थ-रीति ग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ कहे जाते हैं) की प्रधानता होने से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे रीतिकाल नाम दिया।

रीतिकाल को पहले उत्तर मध्यकाल कहा जाता था, परन्तु शुक्ल जी ने रीति की प्रमुखता को लक्ष्य कर इसका नाम रीतिकाल रखा। उनके अनुसार इस काल के कवियों में रीति निरूपण की प्रमुखता परिलक्षित होती है। शृंगार काल नाम विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने दिया तथा अलंकृत काल—मिश्रबंधुओं ने। कला की प्रधानता देखकर कुछ विद्वानों ने इसे कला काल नाम भी दिया है।

रीतिकाल के वर्ग

रीतिकालीन कवियों को तीन वर्गों में बाँटा गया है—

1. **रीतिबद्ध**—जिन्होंने लक्षण ग्रन्थ (रीति ग्रन्थ) लिखकर रीति निरूपण किया, जैसे—देव, केशवदास, चिन्तामणि आदि।
2. **रीतिमुक्त**—जो रीति के बंधन से पूरी तरह मुक्त हैं, जैसे—घनानन्द, बोधा, आलम, ठाकुर।
3. **रीति सिद्ध**—जिन्हें रीति की जानकारी थी, परन्तु उन्होंने लक्षण ग्रन्थ नहीं लिखा, जैसे—बिहारी। रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी हैं। उनके ग्रन्थ का नाम है सतसई। बिहारी सतसई का सम्पादन रत्नाकर ने 'बिहारी रत्नाकर' के नाम से किया है। बिहारी सतसई के दोहों की कुल संख्या 713 है। अन्य दोहे अप्रामाणिक हैं।

रीतिकाल के प्रमुख कवि

कवि	रचनाएँ
1. चिन्तामणि	कविकुल कल्पतरु, काव्य विवेक, शृंगार मंजरी, रस विलास।
2. भूषण	शिवराज भूषण, छत्रसाल दशक, शिवाबावनी, अलंकार प्रकाश।
3. मतिराम	ललित ललाम, मतिराम सतसई, अलंकार पंचाशिका, रसरंज।

4. बिहारी सतसई।



5. देव भावविलास, रस विलास, भवानी विलास, कुशल विलास, प्रेम तरंग, काव्य रसायन, देव शतक, राधिका विलास।
6. घनानन्द वियोग बेलि, सुजान हित प्रबन्ध, प्रीति पावस, कृपाकन्द निबन्ध।
7. बोधा विरह वारीश, इश्कनामा।
8. पद्माकर पद्माभरण, जगद्धिनोद, गंगालहरी, प्रबोध पचासा, कवि पच्चीसी।
9. ग्वाल कवि रसिकानन्द, यमुनालहरी, रसरंग, दूषणदर्पण, अलंकार भ्रम भंजन, दृग्शतक।
10. सेनापति कवित्त रत्नाकर।
11. केशव रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका।

केशव को रीतिकाल का पहला कवि तथा चिन्तामणि को रीतिकाल का प्रवर्तक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने माना है। केशव को कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है। उन्हें सर्वाधिक सफलता संवाद निरूपण में मिली है। वस्तुतः रीतिग्रंथों की अविरल परम्परा केशव के पचास वर्षों बाद चिन्तामणि से प्रारम्भ हुई। इसी कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चिन्तामणि को रीतिकाल का प्रवर्तक माना है तथा केशव को रीतिकाल का प्रथम कवि।

रीतिकाल में कुछ प्रबन्ध काव्य भी लिखे गए; यथा—

लेखक	प्रबन्ध काव्य
चिन्तामणि	— रामाश्वमेध, कृष्णचरित, रामायण
मण्डन	— जानकी जू को ब्याह, पुरन्दर माया
कुलपति मिश्र	— संग्राम सार
सुरति मिश्र	— रामचरित, श्रीकृष्ण चरित
गुमान मिश्र	— नैषध चरित
रामसिंह	— जुगल विलास
पद्माकर	— हिम्मत बहादुर विरुदावली
ग्वाल कवि	— हम्मीरहट, विजय विनोद, काव्य पच्चीसी, छत्र प्रकाश
चन्द्रशेखर वाजपेयी	— हम्मीर हट

रीतिकालीन नाटक

जसवंत सिंह	— प्रबोध चंद्रोदय नाटक
नेवाज	— शकुंतला नाटक
सोमनाथ	— माधव विनोद नाटक
देव	— देवमाया प्रपंच नाटक
ब्रजवासी	— प्रबोध चंद्रोदय नाटक

रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ

1. रीति निरूपण, 2. शृंगारिकता, 3. अलंकरण की प्रधानता, 4. चमत्कार प्रदर्शन, 5. बहुज्ञता प्रदर्शन, 6. भक्ति एवं नीति निरूपण, 7. नारी भावना, 8. प्रकृति चित्रण 9. ब्रज भाषा का प्रयोग, 10. मुक्तक काव्य रचना, 11. दोहा, सवैया, कवित्त छन्दों का प्रयोग।

रीतिमुक्त काव्य-धारा के कवियों में विरह वर्णन की प्रधानता है। घनानन्द सुजान से प्रेम करते थे। उन्होंने अपने काव्य में स्वअनुभूति का चित्रण प्रमुखता से किया। भाषा के लक्षक एवं व्यंजक बल की सीमा इन्हीं को पता थी। घनानन्द के काव्य में में लाक्षणिक पदावली प्रयुक्त है।

9.4 आधुनिक काल (1850 ई.- अब तक)

आधुनिक काल के जनक के रूप में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का नाम लिया जाता है। आधुनिक काल में गद्य की प्रधानता देखकर शुक्लजी ने इसे गद्यकाल नाम दिया है। आधुनिक काल को दो भागों में बाँटा जा सकता है—आधुनिक काल का पद्य, आधुनिक काल का गद्य।



आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल में गद्यरचना की प्रवृत्ति प्रधान होने से इसे गद्यकाल नाम दिया है, परन्तु इस नामकरण से ऐसा आभास होता है कि इस काल में पद्य लिखा ही नहीं गया। इसलिए इसे आधुनिक काल कहना अधिक उपयुक्त है।

वस्तुतः आधुनिक काल में जितने सशक्त गद्य की रचना हुई उतने ही सशक्त पद्य की भी रचना हुई इसलिए आधुनिक काल को दो भागों में बाँटा जा सकता है— (अ) पद्य भाग, (ब) गद्य भाग।

1. आधुनिक काल की कविता (पद्य)

आधुनिक काल की कविता (पद्य) को मोटे तौर पर निम्नलिखित 7 भागों (युगों) में विभक्त कर सकते हैं।

(i) भारतेन्दु युग (1850 – 1900 ई.)

(ii) द्विवेदी युग (1900 – 1920 ई.)

(iii) छायावादी युग (1920 – 1936 ई.)

- (iv) प्रगतिवादी युग (1936 – 1943 ई.)
 (v) प्रयोगवादी युग (1943 – 1953 ई.)
 (vi) नयी कविता (1953 – 1965 ई.)
 (vii) नवगीत (1965 ई. के उपरान्त)

(i) भारतेन्दु युग

भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

कवि	काल	कृतियाँ
1. भारतेन्दु	(1850–1885 ई.)	प्रेममालिका, प्रेमसरोवर, गीतगोविन्द, वर्षाविनोद, विनय प्रेम पचासा।
2. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	(1855-1938 ई.)	जीर्णजनपद, आनन्द अरुणोदय, मयंक महिमा, लालित्य लहरी, वर्षा बिन्दु।



3. प्रतापनारायण मिश्र	(1856-1894 ई.)	प्रेमपुष्पावली, मन की लहर, लोकोक्ति शतक, शृंगार विलास।
-----------------------	----------------	--



4. जगमोहन सिंह	(1857-1899 ई.)	प्रेम सम्पत्ति लता, श्यामलता, श्यामासरोजिनी, देवयानी।
5. अम्बिकादत्त व्यास	(1858-1900 ई.)	पावस पचासा, हो हो होरी, बिहारी विहार।
6. राधाकृष्णदास	(1865-1907 ई.)	भारत बारहमासा, देश दशा, रहीम के दोहों पर कुण्डलियाँ।

7. राधाचरण गोस्वामी

नवभक्तमाल

भारतेन्दु युग आधुनिक काल का प्रवेशद्वार है, कविता रीतिकालीन विषयों को छोड़कर नये विषयों पर होने लगी। कविता की भाषा ब्रजभाषा ही रही। भारतेन्दु जी ने कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र चंद्रिका, बाला बोधिनी पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त इस काल की अन्य प्रसिद्ध पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं—

पत्रिका का नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशन स्थान	सम्पादक का नाम
हिन्दी प्रदीप	(1877 ई.)	इलाहाबाद	बालकृष्ण भट्ट



ब्राह्मण	(1883 ई.)	कानपुर	प्रताप नारायण मिश्र
प्रजाहितैषी		आगरा	राजा लक्ष्मण सिंह

(ii) द्विवेदी युग

महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के सम्पादक के रूप में हिन्दी (कविता) पर पर्याप्त प्रभाव डाला और तमाम कवियों को काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली को अपनाने की प्रेरणा दी। 'प्रिय प्रवास' (हरिऔध) और 'साकेत' (मैथिलीशरण गुप्त) द्विवेदी युग के दो महाकाव्य हैं। इस काल को जागरण सुधार काल भी कहा जाता है।

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि और कृतियाँ

1. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.)—प्रिय प्रवास (1914), वैदेही वनवास (1940 ई.), रस कलश (1940), चुभते चौपदे (1932 ई.), चोखे चौपदे (1932 ई.)।
2. मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.)—जयद्रथ वध (1910), भारत भारती (1912), पंचवटी (1925), साकेत (1931), यशोधरा (1932), द्वापर (1936), जय भारत (1952), विष्णुप्रिया (1957)।



3. राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' (1868-1915 ई.)—स्वदेशी कुण्डल, मृत्युंजय, बसंत वियोग, राम-रावण, विरोध।

4. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (1883-1972 ई.)—कृष्क क्रन्दन, प्रेम पचीसी, त्रिशूल तरंग, करुणा कादम्बिनी।
5. रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962 ई.)—मिलन, पथिक, मानसी, स्वप्न।



6. माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968 ई.)—हिम किरीटिनी, हिमतरंगिनी, युगचारण, समर्पण।



7. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (1897-1960 ई.)—कुंकुम, अपलक, रश्मिरेखा, क्वासि, हम विषपायी जनम के।



8. सुभद्राकुमारी चौहान (1905-1948 ई.)—त्रिधारा, मुकुल।



9. श्यामनारायण पाण्डेय—हल्दी घाटी, जौहर।



10. श्रीधर पाठक (1859-1928 ई.)—कश्मीर सुषमा, देहरादून, भारत गीत।
11. जगन्नाथदास 'रत्नाकर' (1866-1932 ई.)—उद्धवशतक, गंगावतरण, शृंगारलहरी, हिंडोला, हरिश्चन्द्र।



द्विवेदी युग की प्रसिद्ध पत्रिकाएँ

1. नृसिंह	(1907 ई.)	कलकत्ता	अम्बिका प्रसाद वाजपेयी (साप्ताहिक)
2. अभ्युदय	(1907 ई.)	प्रयाग	मदन मोहन मालवीय (साप्ताहिक)
3. कर्मयोगी	(1909 ई.)	प्रयाग	सुन्दर लाल (साप्ताहिक)
4. मर्यादा	(1909 ई.)	प्रयाग	कृष्णकान्त मालवीय (साप्ताहिक)
5. प्रताप	(1913 ई.)	कानपुर	गणेश शंकर विद्यार्थी (साप्ताहिक)
6. प्रभा	(1913 ई.)	खण्डवा	कालूराम (मासिक)
7. सरस्वती	(1900 ई.)	पहले काशी से बाद में प्रयाग से	महावीर प्रसाद द्विवेदी (मासिक)
8. समालोचक	(1902 ई.)	जयपुर	चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (मासिक)

9. इन्दु (1909 ई.) काशी अम्बिका प्रसाद गुप्त (मासिक)
10. पाटलिपुत्र (1914 ई.) पटना काशी प्रसाद जससवाल (मासिक)

हिन्दी का पहला समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड (1826 ई.) में कलकत्ता से बाबू जुगल किशोर के सम्पादकत्व ने प्रकाशित हुआ यह साप्ताहिक पत्र था।

द्विवेदी युगीन प्रवृत्तियाँ

1. राष्ट्रीयता,
2. इतिवृत्तात्मकता,
3. नैतिकता एवं आदर्शवाद,
4. प्रकृति चित्रण,
5. सामाजिक समस्याओं का चित्रण,
6. काव्य रूपों की विविधता,
7. खड़ीबोली को काव्य भाषा के रूप में अपनाना,
8. विविध छन्दों का प्रयोग।

(iii) छायावादी युग

छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है, ऐसा डॉ. नगेन्द्र का मत है।

छायावाद के प्रमुख कवि

1. जयशंकर प्रसाद (1889-1937 ई.) झरना (1918 ई.), आँसू (1925 ई.), लहर (1933 ई.) कामायनी (1935 ई.)।



2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (1897-1963 ई.) अनामिका (1923 ई.), परिमल (1930 ई.), गीतिका (1936 ई.), तुलसीदास (1938 ई.), सरोजस्मृति, आराधना, गीतगुंज।



3. सुमित्रानन्दन पन्त (1900-1977 ई.) उच्छ्वास (1920 ई.), ग्रन्थि (1920 ई.), वीणा (1927 ई.), पल्लव (1928 ई.), गुंजन (1932 ई.)।



4. महादेवी वर्मा (1907-1987 ई.) नीहार (1930 ई.), रश्मि (1932 ई.), नीरजा (1935 ई.), सांध्यगीत (1936 ई.), यामा (1940), दीपशिखा (1942)।



छायावादी काव्य की प्रवृत्तियाँ

1. आत्माभिव्यंजन,
2. सौन्दर्य चित्रण,
3. प्रकृति चित्रण,
4. शृंगार निरूपण,
5. नारी भावना,
6. रहस्यवादी भावना,
7. दुःख और वेदना का काव्य,
8. लाक्षणिकता,
9. प्रतीकात्मकता,
10. खड़ी बोली का काव्य भाषा के रूप में प्रयोग।

'कामायनी' (1935) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य है, जिसमें 15 सर्ग हैं। चिन्ता कामायनी का पहला सर्ग है और आनन्द अन्तिम सर्ग। चिन्ताग्रस्त मनु ने आनन्द तक की यात्रा की है। कामायनी में तीन प्रमुख पात्र हैं—श्रद्धा, मनु, इड़ा जो क्रमशः हृदय, मन, बुद्धि के प्रतीक हैं। कामायनी में शैव दर्शन के अन्तर्गत आने वाले प्रत्यभिज्ञा दर्शन की मान्यताओं एवं शब्दावली का समावेश है। 'पल्लव' पन्तजी की सर्वश्रेष्ठ

छायावादी कृति है। इसमें 40 पृष्ठों की लम्बी भूमिका में पन्त जी ने छायावादी भाषा-शिल्प पर अपनी सम्मति व्यक्त की है। इसलिए इसे छायावाद का **मेनीफेस्टो** (घोषणा-पत्र) कहा जाता है। निराला ओज, औदात्य के कवि हैं। राम की शक्ति पूजा में निराला के व्यक्तिगत जीवन का सत्य भी है। यह सत्य की असत्य पर विजय का काव्य है। महादेवी जी वेदना की कवयित्री हैं। वेदना और रहस्यवाद की प्रधानता होने के कारण उनको 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है। **चिदम्बरा** पर पन्त को तथा **यामा** पर महादेवी को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

छायावादी युगीन पत्र-पत्रिकाएँ

1. मर्यादा	काशी	कृष्णकांत मालवीय एवं सम्पूर्णानन्द	मासिक
2. चाँद	प्रयाग	रामरख सहगल	मासिक
3. प्रभा	कानपुर	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	मासिक
4. माधुरी	लखनऊ	दुलारे लाल भार्गव	मासिक
5. सुधा	लखनऊ	सूर्यकांत त्रिपाठी, निराला	मासिक
6. विशाल भारत	कलकत्ता	बनारसीदास चतुर्वेदी	मासिक
7. हंस	बनारस	प्रेमचंद	मासिक
8. समन्वय	कलकत्ता	निराला जी	मासिक
9. साहित्य संदेश	आगरा	गुलाबराय	मासिक
10. कर्मवीर	जबलपुर	माखन लाल चतुर्वेदी	साप्ताहिक
11. हिन्दी नवजीवन	अहमदाबाद	महात्मा गांधी	साप्ताहिक
12. आज	वाराणसी	बाबूराम विष्णुराव पराङ्कर	दैनिक

(iv) प्रगतिवादी युग

मार्क्सवाद के साहित्यिक संस्करण को प्रगतिवाद कहा गया। मार्क्स की तरह प्रगतिवादी कवि भी समाज को दो वर्गों में बाँटते हैं—शोषक और शोषित। प्रमुख प्रगतिवादी कवि और उनकी रचनाएँ हैं—

1. **नागार्जुन**—युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, भस्मासुर।
2. **केदारनाथ अग्रवाल**—युग की गंगा, नींद के बादल, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आइना।
3. **शिवमंगल सिंह सुमन**—हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय सृजन, विंध्य हिमालय।



4. **त्रिलोचन शास्त्री**—धरती, मिट्टी की बारात, मैं उस जनपद का कवि हूँ।

सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य का क्रमिक विकास हुआ है। उनकी प्रारम्भिक रचनाएँ भले ही छायावादी हैं, पर बाद में वे प्रगतिवाद की ओर मुड़ गये। पन्त की प्रगतिवादी रचनाएँ हैं—युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या।

दिनकर, निशा के काव्य में भी प्रगतिवादी स्वर है। दिनकर की हुंकार, निराला की बादल राग, कुकुरमुत्ता जैसी कविताओं में प्रगतिवादी स्वर है।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के कवि ● ● ● ● ●

1. **हरिवंश राय बच्चन**—मधुशाला, मधुबाला, निशा निमन्त्रण, मधुकलश, एकान्त संगीत, प्रणय पत्रिका, बंगाल का काल, जाल समेटा।



2. **रामधारी सिंह 'दिनकर'**—रेणुका, प्रणभंग, हुंकार, परशुराम की प्रतीक्षा, उर्वशी, रसवंती, रश्मिरथी, हारे को हरिनाम, भृत्तितिलक। उर्वशी पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।



3. **रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'**—मधूलिका, अपराजिता, करील, किरणबेला, लाल चूनर, वर्षान्त के बादल।
4. **नरेन्द्र शर्मा**—धूल फूल, प्रभात फेरी, द्रौपदी, सुवर्ण, उत्तर जय, रक्त चन्दन, प्रवासी के गीत, पलाश वन, प्यासा निर्झर।

(v) प्रयोगवाद एवं नयी कविता

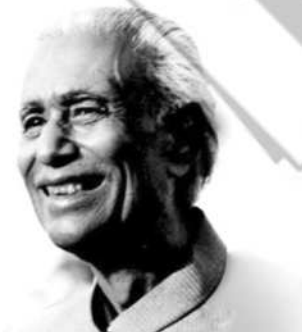
प्रयोगवाद के प्रवर्तन का श्रेय अज्ञेय को दिया जाता है, जिन्होंने तार सप्तक (1943) में सात ऐसे कवियों की रचनाएँ संकलित—सम्पादित कीं, जो नये प्रयोग में विश्वास करते थे।

भाषा, विषय-वस्तु, शिल्प आदि की दृष्टि से नये प्रयोग इन कवियों ने किये।

1. तार सप्तक (1943) के कवि—1. नेमिचन्द्र जैन, 2. मुक्तिबोध, 3. भारतभूषण अग्रवाल, 4. प्रभाकर माचवे, 5. गिरिजाकुमार माथुर, 6. रामविलास शर्मा, 7. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।
2. दूसरा सप्तक (1951) के कवि—1. भवानीप्रसाद मिश्र, 2. शकुन्तला माथुर, 3. हरिनारायण व्यास, 4. शमशेर बहादुर सिंह, 5. नरेश मेहता, 6. रघुवीर सहाय, 7. धर्मवीर भारती।
3. तीसरा सप्तक (1959) के कवि—1. प्रयागनारायण त्रिपाठी, 2. कुँवर नारायण, 3. कीर्ति चौधरी, 4. केदारनाथ सिंह, 5. मदन वात्स्यायन, 6. विजयदेव नारायण साही, 7. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।
4. चौथा सप्तक (1978) के कवि—1. अवधेश कुमार, 2. राजकुमार कुंभज, 3. स्वदेश भारती, 4. नंदकिशोर आचार्य, 5. सुमन राजे, 6. श्री राम वर्मा, 7. राजेन्द्र किशोर।

प्रयोगवाद एवं नयी कविता के प्रमुख कवि

- | कवि | नयी कविताएँ |
|---------------------------------|--|
| 1. अज्ञेय (1911-1987 ई.) | हरी घास पर क्षण भर, सागर मुद्रा, बाबरा अहेरी, चिन्ता, इन्द्र धनु रौंदे हुए ये, इत्यलम, आँगन के पार द्वार, असाध्य वीणा, अरी ओ करुणा प्रभामय, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ। अज्ञेय प्रयोगवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। |
| 2. मुक्ति बोध (1917-1964 ई.) | चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल। |
| 3. धर्मवीर भारती (1926-1997 ई.) | अन्धा युग, ठण्डा लोहा, कनुप्रिया, सातगीत वर्ष। |



4. नरेश मेहता (1922 ई.) बनपांखी सुनो तो, बोलने दो चीड़ को, महाप्रस्थान, अरण्या, संशय की एक रात।
5. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना काठ की घण्टियाँ, बाँस का पुल, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी।
6. कुँवर नारायण चक्रव्यूह, आत्मजयी, परिवेश—हम तुम, आमने-सामने कोई दूसरा नहीं।

7. शमशेरबहादुर सिंह चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने, काल तुझसे होड़ मेरी, बात बोलेगी हम नहीं।
8. दुष्यन्त कुमार साये में धूप, सूर्य का स्वागत।
9. श्रीकान्त वर्मा दिनारम्भ।
10. विष्णु चन्द्र शर्मा आकाश विभाजित है।
11. विजेन्द्र त्रास।
12. धूमिल संसद से सड़क तक।
13. लीलाधर जंगूड़ी नाटक जारी है।

छायावादोत्तर काल की प्रमुख पत्रिकाएँ

- | पत्रिका | मुख्य | संस्थापक | आवृत्ति |
|------------|--------|---------------|-----------|
| 1. धर्मयुग | मुम्बई | धर्मवीर भारती | साप्ताहिक |



- | | | | |
|--------------------------|--------|------------------|-----------|
| 2. साप्ताहिक हिन्दुस्तान | दिल्ली | मनोहर श्याम जोशी | साप्ताहिक |
|--------------------------|--------|------------------|-----------|



- | | | | |
|-----------|--------|--------------|-----------|
| 3. दिनमान | दिल्ली | घनश्याम पंकज | साप्ताहिक |
|-----------|--------|--------------|-----------|



4. नंदन दिल्ली जय प्रकाश भारती पाक्षिक



5. पराग दिल्ली कन्हैयालाल नंदन पाक्षिक
डॉ. हरि कृष्ण देवसेरे



6. कादम्बिनी दिल्ली राजेन्द्र अवरस्थी मासिक



7. हंस दिल्ली राजेन्द्र यादव मासिक
8. सारिका दिल्ली कमलेश्वर, मासिक
अवध नारायण मुद्गल
9. गंगा पटना कमलेश्वर त्रैमासिक
10. भाषा दिल्ली केन्द्रीय हिन्दी त्रैमासिक
निदेशालय

11. नई कहानियाँ इलाहाबाद भैरव प्रकाश गुप्ता मासिक



(vi) नवगीत

नयी कविता और नवगीत एक-दूसरे के विरोधी नहीं, एक दूसरे के पूरक हैं। नवगीत विधा के प्रवर्तक डॉ. शंभू नाथ सिंह माने जाते हैं।

लेखक	नयी कविता/गीत
1. शम्भूनाथ सिंह	नवगीत दशक 1, 2, 3, नवगीत अर्द्धशती।
2. राजेन्द्र प्रसाद सिंह	आओ खुली बयार।
3. रामदरश मिश्र	पथ के गीत, बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ।
4. ठाकुर प्रसाद सिंह	वंशी और मॉडल।
5. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'	कुहरे की प्रत्यंचा, चुप्पियों की पैजनी, यात्राएँ साथ-साथ।
6. वीरेन्द्र मिश्र	झुलसा है छाया नट धूप में।
7. उमाकान्त मालवीय	सुबह रक्त पलाश की।
8. रमाकान्त अवरस्थी	बन्द न करना द्वार।
9. रवीन्द्र भ्रमर	इतिहास दुबारा लिखो, रमेश रंजक के लोक गीत, सोन मछली मन वंशी।
10. रामसनेही लाल शर्मा	मन पलाश वन और दहकती संध्या।
'यायावर'	

आधुनिक (वर्तमान) पत्रिकाएँ

1. संचेतना	दिल्ली	डॉ. महीप सिंह	मासिक
2. आलोचना	दिल्ली	डॉ. नामवर सिंह	त्रैमासिक
3. समीक्षा	पटना	गोपाल राय	मासिक
4. आजकल	दिल्ली	प्रताप सिंह विष्ट	—
5. वैचारिकी	मुम्बई	मणिका मोहिनी	मासिक
6. विकल्प	प्रयाग	धनंजय	मासिक
7. वसुधा	जबलपुर	हरिशंकर परसाई	मासिक
8. कथान्तर	पटना	प्रताप सिंह	मासिक
9. तद्भव	लखनऊ	अखिलेश	मासिक
10. ज्ञानोदय	कलकत्ता	कन्हैया लाल मिश्र	मासिक
		प्रभाकर	

2. आधुनिक काल की विभिन्न गद्य विधाएँ

(i) उपन्यास

उपन्यासकार

उपन्यास

- लाला श्रीनिवास दास परीक्षा गुरु (1882 ई.) हिन्दी का पहला उपन्यास (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार)
- श्रद्धाराम फिल्लौरी भाग्यवती (1877 ई.)
- देवकीनन्दन खत्री चन्द्रकान्ता (1891), चन्द्रकान्ता संतति, भूतनाथ, काजर की कोठरी



- राधाकृष्णदास निःसहाय हिन्दू (1890)
- हरिऔध ठेठ हिन्दी का ठाठ, अधखिला फूल
- प्रेमचन्द सेवा सदन (1918 ई.), प्रेमाश्रम (1922 ई.), रंगभूमि (1925), कायाकल्प (1926 ई.), निर्मला (1927), गबन (1931), कर्मभूमि (1933), गोदान (1935) मंगलसूत्र (अपूर्ण)



- कौशिक माँ, भिखारिणी
- जयशंकर प्रसाद कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)

- चतुरसेन शास्त्री
- वृंदावनलाल वर्मा

वैशाली की नगरवधू, वयं रक्षामः, सोमनाथ, आलमगीर, सोना और खून। गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, झाँसी की रानी, माधव जी सिन्धिया।



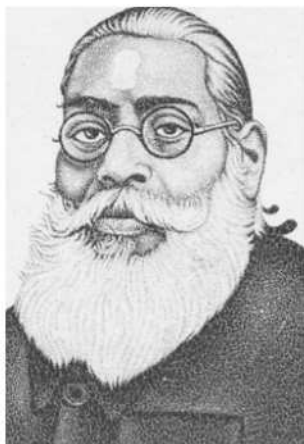
- निराला अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती।
- जैनेन्द्र परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, विवर्त, व्यतीत।
- इलाचन्द्र जोशी संन्यासी, परदे की रानी, प्रेत और छाया, जहाज का पंक्षी, जिप्सी, ऋतु चक्र।
- अज्ञेय शेखर एक जीवनी (दो भाग), अपने अपने अजनबी, नदी के द्वीप।
- यशपाल दादा कामरेड, पार्टी कामरेड, देशद्रोही, मनुष्य के रूप, अमिता, दिव्या, झूठा-सच, तेरी मेरी उसकी बात।
- अमृतलाल नागर बूँद और समुद्र, सुहाग के नूपुर, खंजन नयन, मानस का हंस, अमृत और विष।



- हजारीप्रसाद द्विवेदी बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चन्द्र लेख, पुनर्नवा, अथ रैक्व आख्यान।
- फणीश्वरनाथ 'रेणु' मैला आंचल (1954), परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतपा।
- नागार्जुन रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, दुखमोचन, बाबा केदारनाथ, बलचनमा।

• शिवप्रसाद गुप्त

देहाती दुनिया।



• शिवप्रसाद सिंह

अलग-अलग वैतरणी, गली आगे मुड़ती है, नीला चांद, वैश्वानर, कुहरे में युद्ध।

• श्री लाल शुक्ल

राग दरबारी, आदमी का जहर।

• निर्मल वर्मा

लाल टीन की छत, रात का रिपोर्टर, वे दिन, एक चिथड़ा सुख।

• उषा प्रियवंदा

पचपन खंभे लाल दीवारें।

• मन्नू भण्डारी

आपका बंटी, महाभोज, एक इंच मुस्कान (राजेन्द्र यादव के साथ)।

• सुरेन्द्र वर्मा

मुझे चाँद चाहिए।



• मनोहर श्याम जोशी

कुरु कुरु स्वाहा, क्याप, लखनऊ मेरा लखनऊ।



• वदी उज्जमा

एक चूहे की मौत।

• धर्मवीर भारती

गुनाहों का देवता।

• शैलेश मटियानी

बोरीबली से बोरीबन्दर।

• अमृत राय

बीज, नागफनी का देश, हाथी के दाँत, सुख-दुख।



• सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

सोया हुआ जल, पागल कुत्तों का मसीहा, सूने चौखटे।



• नरेन्द्र कोहली

दीक्षा, संघर्ष, युद्ध, अवसर, आतंक, महासागर (8 भाग)।



• नरेश मेहता

डूबते मस्तूल, प्रथम फाल्गुन।

• गिरिराज किशोर

पहला गिरमिटिया।

- मृदुला गर्ग चितकोबरा, कठगुलाब, उसके हिस्से की धूप।



- विष्णु प्रभाकर अर्द्धनारीश्वर।
- महेन्द्र भल्ला एक पति के नोट्स।
- ममता कालिया दुःखम सुखम, बेघर, नरक-दर-नरक।



- तुलसीराम मणि कर्णिका।
- मृणाल पाण्डेय षट्तरंग पुराण, रास्तों पर भटकते हुए।



- कमलेश्वर डाक बैंगला, काली आँधी, सुबह दोपहर शाम, एक सड़क सत्तावन गलियाँ।
- काशीनाथ सिंह काशी का असी, रेहन पर रघु।
- ज्ञान चतुर्वेदी नरक यात्रा।
- भीष्म साहनी तमस, बसंती, झरोखे, कड़ियाँ।

- भगवतीचरण वर्मा चित्रलेखा, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, भूले-बिखरे चित्र, सामर्थ्य और सीमा।



(ii) आत्मकथाएँ

आत्मकथा

- अर्द्धकथानक
- मेरी जीवन यात्रा
- सिंहावलोकन
- मेरी अन्तर्कहानी
- मेरी असफलताएँ

लेखक

- बनारसीदास जैन
- राहुल सांकृत्यायन
- यशपाल
- चतुरसेन शास्त्री
- बाबू गुलाबराय



- क्या भूलूँ क्या याद करूँ हरिवंश राय बच्चन
- नीड का निर्माण फिर हरिवंश राय बच्चन
- दस द्वार से सोपान तक हरिवंश राय बच्चन
- प्रवास की डायरी हरिवंश राय बच्चन
- चाँद सूरज के वीरन देवेन्द्र सत्यार्थी



- अपनी खबर
- साठ वर्ष—एक रेखांकन
- गालिब छुटी शराब
- जो मैंने जिया

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
सुमित्रानन्दन पन्त
रवीन्द्र कालिया
कमलेश्वर



- गुड़िया भीतर गुड़िया मैत्रेयी पुष्पा



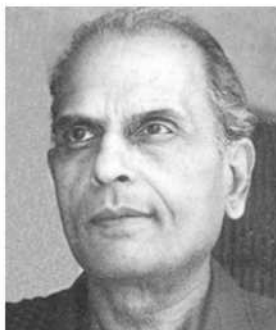
(iii) जीवनी

जीवनी

- भक्तमाल
- आवारा मसीहा (शरत चन्द्र की जीवनी)
- कलम का सिपाही (प्रेमचन्द की जीवनी)
- निराला की साहित्य साधना (निराला की जीवनी) (3 खण्ड)

लेखक

नाभादास
विष्णु प्रभाकर
अमृतराय
रामविलास शर्मा



- गुरु नानक

मन्मथनाथ गुप्त



- प्रेमचन्द घर में
- दिनकर—एक सहज पुरुष
- रांगेय राघव—एक अंतरंग परिचय
- बाबूजी (नागार्जुन)
- महाप्राण निराला
- चम्पारन में महात्मा गाँधी
- मेरे जीवन में गाँधी जी

शिवरानी देवी
शिवसागर मिश्र
सुलोचना रांगेय राघव
शोभाकान्त
गंगाप्रसाद पाण्डेय
राजेन्द्र प्रसाद
घनश्यामदास बिड़ला



- वट वृक्ष की छाया में
- महामानव महापण्डित

कुमुद नागर
कमला सांकृत्यायन



(iv) नाटक

- | लेखक | नाटक |
|-------------------------|---|
| • भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति (1873), सत्य हरिश्चन्द्र (1875), श्री चंद्रावली (1876), भारत दुर्दशा (1880), नील देवी (1881), अंधेर नगरी (1881), सती प्रताप (1883), प्रेम जोगिनी (1875), भारत जननी (1877)। |
| • श्रीनिवास दास | प्रह्लाद चरित्र, तप्तासंवरण, रणधीर-प्रेम मोहिनी। |
| • राधाकृष्णदास | महाराणा प्रताप, महारानी पद्मावती, धर्मालाप, दुःखिनी बाला। |
| • बालकृष्ण भट्ट | दमयंती स्वयंम्बर, वेणी संहार, कलिराज की सभा, शिक्षादान, रेल का विकट खेल। |
| • राधाचरण गोस्वामी | तन मन धन गोसाई जी के अर्पण, बूढ़े मुँह मुहासे, लोग देखें तमासे, अमर सिंह राठौर, सती चन्द्रावली। |
| • जयशंकर प्रसाद | राज्यश्री (1915), विशाख (1921), अजातशत्रु (1922), कामना (1924), जनमेजय का नागयज्ञ (1926 ई.), स्कंदगुप्त (1928), एक घूँट (1930), चन्द्रगुप्त (1931), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.)। |
| • हरिकृष्ण 'प्रेमी' | रक्षाबन्धन, प्रतिशोध, स्वप्नभंग, आहुति, आन का मान, अमृत पुत्री, विषपान, कीर्ति स्तम्भ, स्वर्ण विहान। |
| • लक्ष्मी नारायण मिश्र | संन्यासी, मुक्ति का रहस्य, राजयोग, सिन्दूर की होली, आधी रात, गरुड़ध्वज, वितस्ता की लहरें। |



- | | |
|------------------|--|
| • विष्णु प्रभाकर | समाधि, डॉक्टर, युगे युगे क्रान्ति, टूटते परिवेश। |
|------------------|--|



- | | |
|---------------------|---|
| • जगदीशचन्द्र माथुर | कोणार्क, शारदीया, पहला राजा, दशरथ नन्दन। |
| • मोहन राकेश | आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे। |
| • लक्ष्मीनारायण लाल | अन्धा कुआँ, दर्पण, मादा कैकटस, सूर्य मुख, मिस्टर अभिमन्यु, कफर्यू, अब्दुल्ला दीवाना, सगुन पंछी, सबरंग-मोहभंग। |
| • सुरेन्द्र वर्मा | सेतुबंध, द्रौपदी, नायक खलनायक विदूषक, आठवाँ सर्ग, छोटे सैयद बड़े सैयद, शकुन्तला की अँगूठी। |
| • नरेश मेहता | सुनहरे घण्टे, खण्डित यात्राएँ। |
| • भीष्म साहनी | कबिरा खड़ा बजार में। |
| • मणि मधुकर | रस गन्धर्व, बुलबुल सराय। |
| • गिरिराज किशोर | नरमेध, प्रजा ही रहने दो। |



- | | |
|----------------------|-------------------|
| • सुमित्रानन्दन पन्त | रजत शिखर, शिल्पी। |
| • बेचन शर्मा 'उग्र' | चुम्बन, डिक्टेटर। |



(v) एकांकी

- | लेखक | एकांकी |
|-------------|---|
| • भुवनेश्वर | कारवाँ, स्ट्राइक, प्रतिभा का विवाह, लॉटरी, ऊसर। |

- रामकुमार वर्मा बादल की मृत्यु, औरंगजेब की आखिरी रात, दीपदान, रेशमी टाई, सप्तकिरण, कौमुदी महोत्सव।
- उपेन्द्रनाथ अश्क चरवाहे, तूफान से पहले, कैद और उड़ान, अधिकार का रक्षक, स्वर्ग की झलक, लक्ष्मी का स्वागत, सूखी डाली।



- उदयशंकर भट्ट एक ही कब्र में, समस्या का अन्त, आज का आदमी, स्त्री का हृदय, पर्दे के पीछे।
- मोहन राकेश अण्डे के छिलके, सिपाही की माँ, कफर्यू।



- धर्मवीर भारती नदी प्यासी थी, आवाज का नीलाम, नीली झील।
- रेवतीरमण शर्मा मुझे जीने दो, अमावस का अन्धकार, उतार-चढ़ाव।
- चिरंजीव दफ्तर जाने का समय, चतुर्भुज महाशय, नया जन्म, चक्रव्यूह।
- जगदीश चन्द्र माथुर भोर का तारा, कबूतर खाना, घोंसले, ओ मेरे सपने।
- सेठ गोविन्ददास कंगाल नहीं, सप्तरश्मि, एकादशी पंचभूत, चतुष्पथ।



- विष्णु प्रभाकर प्रकाश और परछाई, इंसान, बारह एकांकी, दस बजे रात, ये दायरे।
- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' चार बेचारे।

(vi) रेखाचित्र संस्मरण

- | लेखक | संस्मरण |
|---------------------|-------------------------------|
| • पद्म सिंह शर्मा | पद्मपराग |
| • श्री राम शर्मा | बोलती प्रतिमा |
| • महादेवी वर्मा | अतीत के चलचित्र |
| • महादेवी वर्मा | स्मृति की रेखाएँ |
| • महादेवी वर्मा | पथ के साथी |
| • महादेवी वर्मा | मेरा परिवार |
| • रामवृक्ष बैनीपुरी | माटी की मूर्तें, मील के पत्थर |



- बनारसीदास चतुर्वेदी संस्मरण, रेखाचित्र, हमारे आराध्य



- जगदीश चन्द्र माथुर सेतुबन्ध, दस तस्वीरें



- डॉ. नगेन्द्र चेतना के बिम्ब